# घुप्प घने जंगल में कुत्ता

लेखन व चित्रांकन: डिक गाकनबाख़
भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

बहुत समय पहले एक घुप्प घने जंगल में घूमते हुए जंगली जानवरों को किसी आदमी का जूता मिलता है। तब एक जंग खाई पुरानी केतली और उसके बाद दरार पड़ी एक सफ़ेद तश्तरी।

उन्हें यह समझते देर नहीं लगती कि उन्हें एक पौधा (जूता), एक घोंसला (केतली) और आसमान से गिरा चाँद (तश्तरी) मिला है।

पर कुत्ता उनसे इत्तफ़ाक नहीं रखता। उन्हें सच बता ही देता है। पर कई पालतू जानवर जितना वे सोचते हैं दरअसल उतना जानते नहीं, सो जंगली जानवरों को कुत्ते की बात पर कतई भरोसा नहीं होता।

डिक गाकनबाख़ का यह किस्सा शब्दों और चित्रों के सहारे हमें बताता है कि कुत्ता आख़िर घने जंगलों से इतनी दूर आकर इन्सानों के साथ क्यों रहने लगा है।

# घुप्प घने जंगल में कुत्ता

लेखन व चित्रांकन: डिक गाकनबाख़

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

बहुत समय पहले, घुप्प घने जंगल में घूमते हुए जंगली जानवरों को इन्सान का एक जूता मिलता है।

"यह भला क्या है?" उन्होंने जानना चाहा। इसलिए, क्योंकि उन्होंने इसके पहले कभी जूता देखा ही नहीं था।

"मुझे मालूम है कि यह क्या है," भालू ने कहा। "यह एक पौधा है!"

"इधर देखो!" भालू ने दूसरे जानवरों को जूते के दोनों ओर लटकते तस्मे दिखाए। "बेशक से इसकी जड़े हैं," वह पूरे यक़ीन के साथ बोला।

"इसमें कोई शक नहीं," लोमड़ी ने सहमति जताई। "हम इसे वहाँ रोप देंगे जहाँ अच्छी धूप आती हो," लोमड़ी ने सुझाया। "हो सकता है किसी दिन इसमें फल उग आएं।"

भालू जानकार होने के अहसास से भर उठा। उसने जूता उठाया और आगे चल दिया। सभी जानवर घूमते-टहलते आगे बढ़े, जब तक उन्हें एक जंग खाई केतली न दिखाई दी।
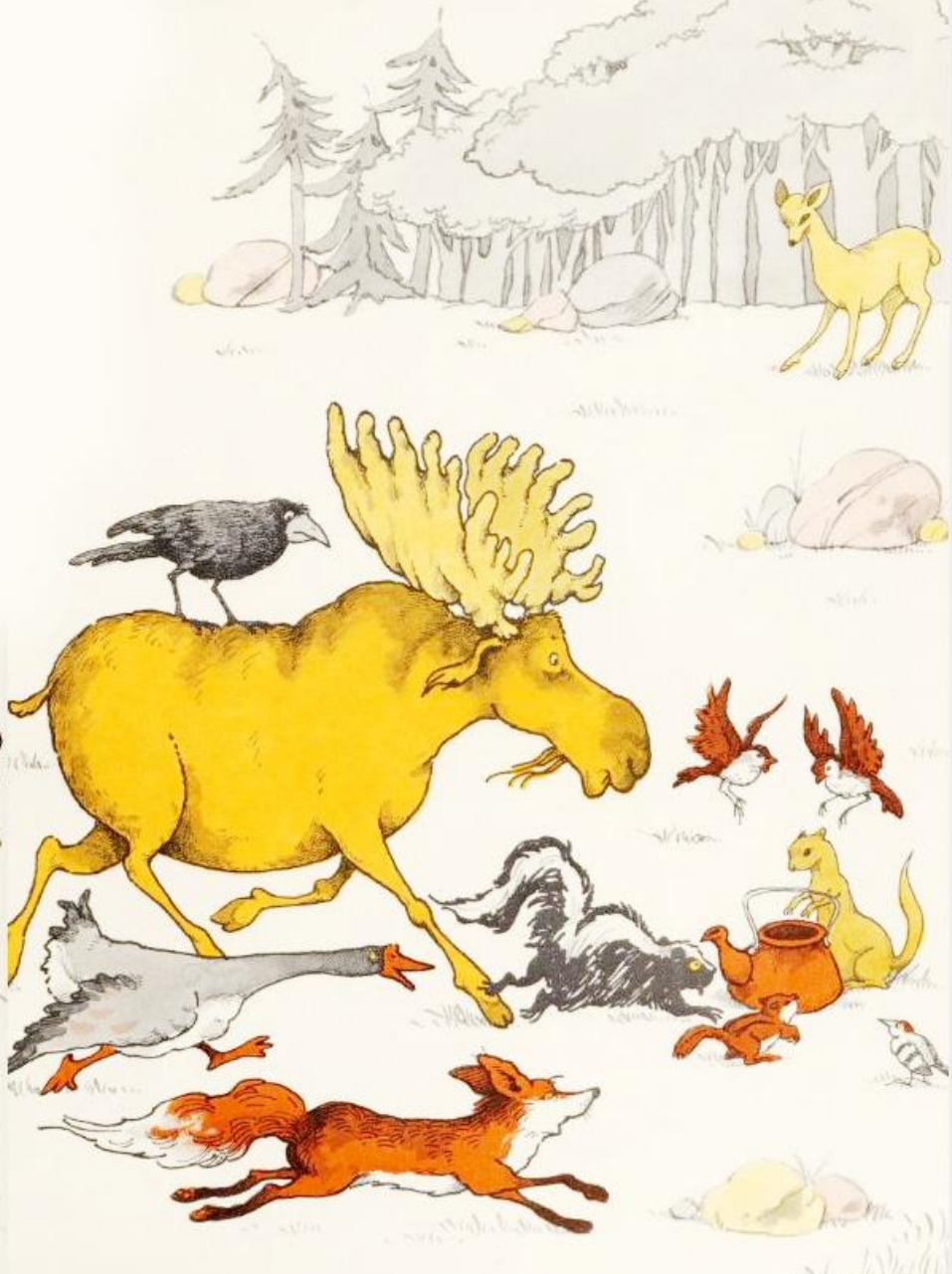
“अब यह क्या हो सकता है?” जानवर उस अजीब सी चीज़ को सूंघते हुए सोचने लगे।

“हमें पता है,” पाखियों ने चहक कर कहा। वे खुद को भालू से कम अक्लमन्द जताना जो नहीं चाहते थे। ‘ ‘यह एक किस्म का घोंसला है,” वे बोले।

“इधर देखो!” एक चिड़िया ने केतली के किनारे पर चोंच मारते कहा, “पाखी यहाँ से अन्दर घुस सकता है।”

“और यहाँ नीचे,” दूसरी चिड़िया केतली के अन्दर से चहकी, “इस गड्ढे में अण्डे बिलकुल महफ़ूज़ रहते हैं।”

“बात तो सही है,” बारहसिंगे ने इक़रार किया। “इससे बेहतर घोंसला हो ही नहीं सकता।”
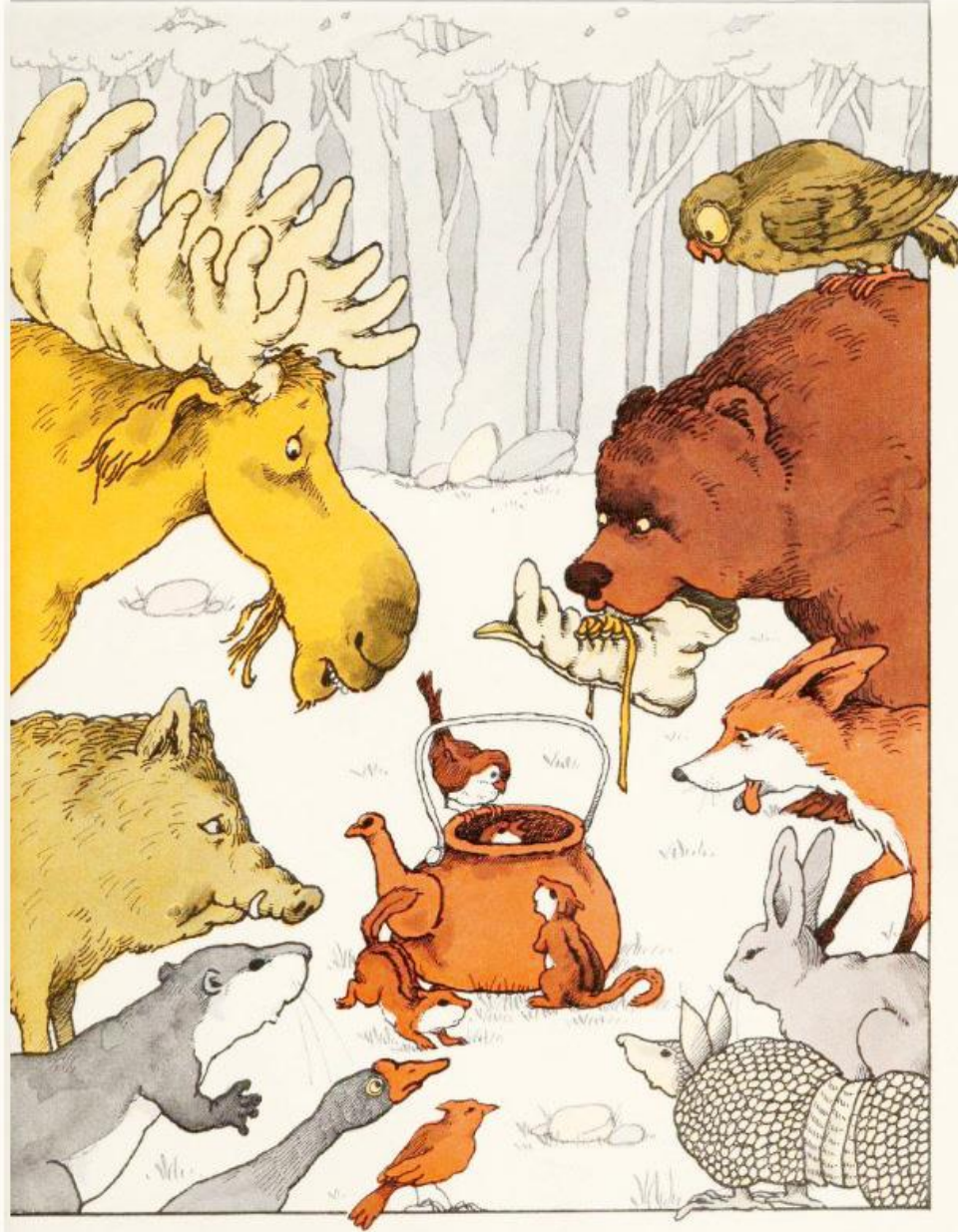
सभी जानवर फ़िर से चल पड़े।

पाखी उनसे कुछ ऊपर उड़ रहे थे। नई मिली केतली का हत्था उन्होंने मिल-जुल कर अपनी चोंचों में पकड़ रखा था।

कुछ ही देर में जानवरों को एक सफ़ेद तश्तरी दिखी जो कुछ तड़की हुई थी।
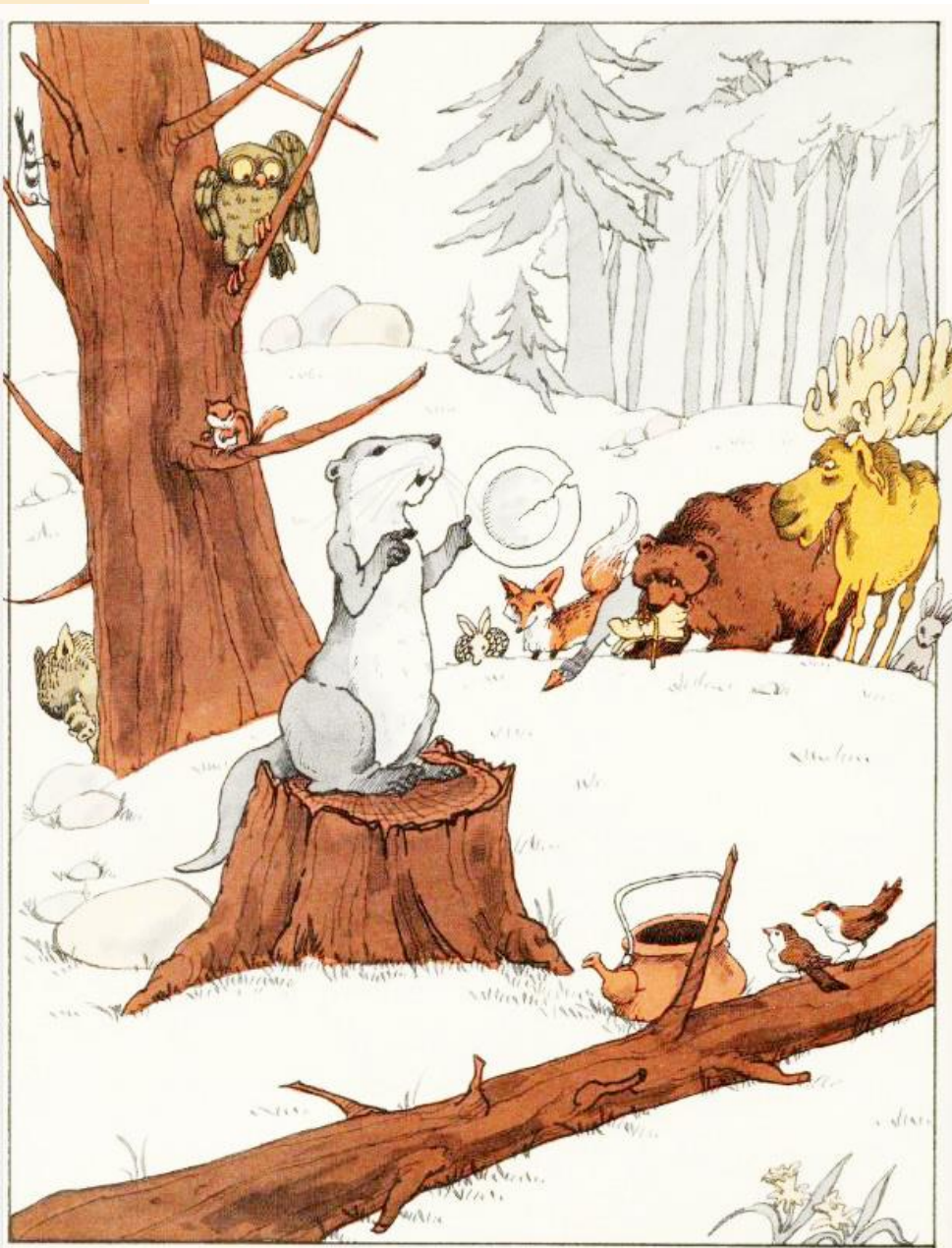
“अब यह भला क्या है?” पशुओं ने एक-दूसरे से पूछा।

“अरे, यह तो चाँद है!” ऊदबिलाव बोल पड़ा। “और यह आसमान से नीचे गिर पड़ा है।”

जनवरों को ऊदबिलाव पर विश्वास ही नहीं हुआ।

कुछ देर चुप्पी छाई रही। सबकी मूंछें फड़फडाईं।

“और कुछ हो भी क्या सकता है,” आखिरकार ख़रगोश ने कहा। “यह चाँद जैसा ही गोल जो है।”

“सो तो है,” लोमड़ी बोली। “और चाँद जैसा सफ़ेद भी तो है।”

सभी जानवरों ने सहमति में सिर हिलाया। “यह चाँद ही है, इसमें कोई शक नहीं,” वे बोले।

वे यह जानते थे कि सूरज के ढ़लते ही उन्हें चाँद की ज़रूरत पड़ेगी, सो ऊदबिलाव ने तश्तरी अपने मुँह में उठाई और उसे लिए आगे चल दिया।

जल्दी ही उनके तेज़ नाकों ने एक दूसरे जानवर की बू पकड़ी जो घुप्प घने जंगल में ही रहता था। यह कुत्ता था। ''अरे इधर देखो कुत्ते,'' जानवर बोले। ''ज़रा देखो तो सही हमें क्या-क्या मिला है!''

''यह देखो!'' जूते वाले भालू ने कहा। ''हमें यह पौधा मिला है।''

''और एक घोंसला,'' केतली थामे पाखियों ने कहा।

''हम खुशकिस्मत थे,'' ऊदबिलाव बोला, ''हमें चाँद भी मिल गया, जो आसमान से टपक कर नीचे गिर गया था।''

अब सब जानवर चुप हो कुत्ते से अपनी तारीफ़ सुनने का इंतजार करने लगे।

''मुझे यह बताते बड़ा अफ़सोस है,'' कुत्ते ने बड़े अदब से कहा, ''पर इनमें से कुछ भी वह नहीं है, जो तुम सब सोच रहे हो।''

''छीः!छीः!'' सभी गुस्सा कर कुत्ते पर चीख पड़े।

"जितनी मर्ज़ी छीः छीः करो," कुत्ते ने अड़ते हुए कहा। "कुछ समय पहले मैं घुप्प घने जंगल से बहुत दूर एक ऐसी जगह गया था जहाँ मैंने ऐसी ढेरों चीज़ें देखी थीं। वह चाँद नहीं है," कुत्ते ने ऊदबिलाव से कहा। "उस पर खाना रख कर खाया जाता है। उसे तश्तरी कहते हैं।"

"क्या बकते हो," ऊदबिलाव बिगड़ कर बोला। "खाना खाने के के लिए किसी चीज़ की भला क्या ज़रूरत होती है?"
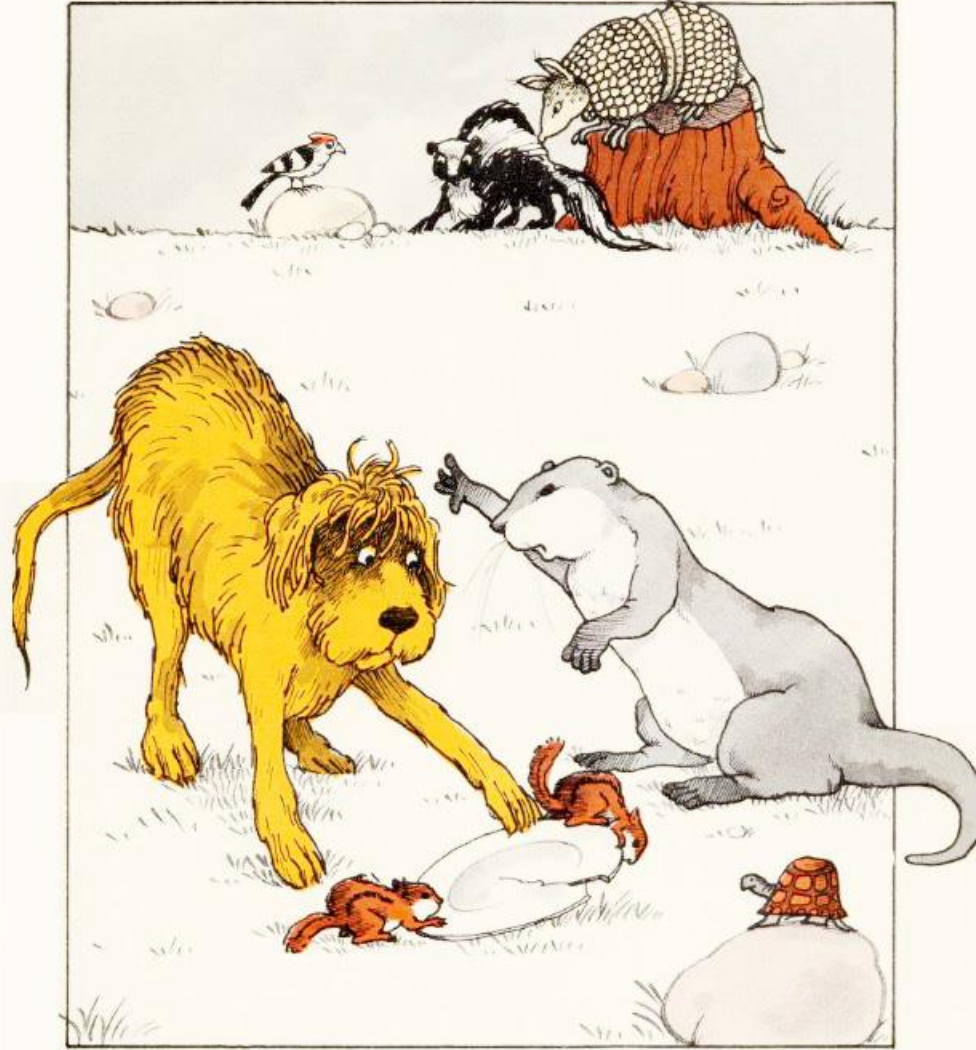
''बहरहाल सच यही है,'' कुत्ता बोला। ''और यह घोंसला नहीं है,'' उसने चिड़ियों से कहा। ''इसमें पानी गरम किया जाता है। इसे केतली कहते हैं।''

''यह तो निरी बेवकूफ़ी है,'' चिड़ियों ने कहा। ''गरम पानी की ज़रूरत भला किसको पड़ती है?''

''और वह,'' कुत्ता भालू से मुख़ातिब हुआ, ''कोई पौधा-वौधा नहीं है। वह आदमी का जूता है।''

''आदमी?'' भालू ने चकरा कर पूछा। ''मैंने ऐसी किसी चीज़ का नाम कभी सुना ही नहीं है।''

''हाँ भई आदमी, और औरत भी,'' कुत्ते ने समझाते हुए कहा। ''इन जीवों के दो पैर होते हैं। वे हमारी ही तरह चलते हैं, खाते-पीते हैं और बोलते हैं। पर वे हम जो करते हैं उससे भी ज़्यादा बहुत कुछ कर सकते हैं।''

''क्या बेतुकी बात करते हो,'' भालू भुनभुनाया। ''दो पैरों वाले आदमी और औरत मुझसे ज़्यादा कैसे कर सकते हैं, जिसके चार पैर हैं।!''

"माना कि उनके पंख नहीं हैं और पैर भी सिर्फ़ दो ही हैं," कुत्ते ने बड़े धीरज से समझाया। "पर मेरा विश्वास करो आदमी अपने पैरों में पहनने के लिए जूतों जैसी चीज़ें बना सकता है।"

पैरों में पहनने की किसी चीज़ के ख़याल से ही सभी जानवर पगला कर हंसने लगे।

"सुना तुम सबने?" ख़रगोश चीखा। "बेवकूफ़ कुत्ते तुम झूठ पर झूठ बके जा रहे हो!"

पाखी पहले चहके, तब ठिठियाए। ऊदबिलाव इतना हंसा कि उसे हिचकियाँ आने लगीं। भालू ने हंसी के मारे अपनी थुलथुल तोंद पकड़ ली और बारहसिंगा हंसी के आँसू बहाता धरती पर लोट-पोट होने लगा।

"यह सब सच है!" कुत्ता भभक कर चीखा। "हंसना बन्द करो, नही तो मैं हमेशा के लिए जंगल को छोड़ जाऊँगा।"

"तो जाओ (हिचकी), बेशक चले जाओ!" ऊदबिलाव ने पलट कर कहा। "वैसे भी तुम तो देखने पर (हिचकी) चाँद तक को नहीं पहचान सकते!"

ऊदबिलाव का ताना सुन जानवरों को और ज़ोर से हंसी आई।

कुत्ते के आत्म-सम्मान को ठेस पहुँची। सबका उस पर यों हंसना, उसका मखौल उड़ाना उसे पसन्द न आया।

"तो ठीक है," उसने गुरूर से अपना सिर ऊपर उठाते कहा, "मैं जाकर आदमी के साथ ही रहने लगूंगा। शायद वहाँ मेरा स्वागत हो।"

सो चतुर-सुजान कुत्ता इन्सानों के पास रहने चला आया, जहाँ न केवल सबने उसे पसन्द किया, बल्की खूब प्यार भी दिया। वह खुशी-खुशी तश्तरी पर परोसा गया खाना खाता।

केतली में गरम किए गए पानी से, उसके बालों में छिपे बैठे पिस्सुओं से भी उसे छुटकारा मिल गया। और जब कोई उसे देख न रहा होता तो वह बड़े मज़े से बैठ कर जूतों को चबाता।

“शायद!” वह चबाते-चबाते सोचता, “अगर मैं सारे के सारे जूतों को चबा जाऊँ तो शायद कोई उन्हें मेरे पैरों में पहनाने की बात ही न सोचे!”